

टेस्ला मॉडल एस भारत में हो सकती है लॉन्च, खूबियां जो बनाती हैं इसे दूसरी इलेक्ट्रिक सेडान से अलग

दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति elon musk की इलेक्ट्रिक कार कंपनी Tesla भारत में जल्द ही एंट्री मारने वाली है। इस साल के आखिरी तक भारत में टेस्ला अपनी गाड़ियों को लॉन्च कर सकती है। इसके तहत कंपनी की Tesla Model S भी लॉन्च हो सकती है। जिसके 5 बेहतरीन फीचर्स के बारे में हम यहां पर आपको बता रहे हैं।

नई दिल्ली। इलेक्ट्रिक गाड़ियां बनाने वाली कंपनी Tesla जल्द ही भारत में एंट्री मारने वाली है। इसके लिए कंपनी ने तैयारी भी शुरू कर दी है। वहीं, टेस्ला ने भारत में अपने शोरूम को खोलने के लिए जगह भी पक्की कर ली है। टेस्ला की इलेक्ट्रिक गाड़ियां इस साल की आखिरी तक लॉन्च हो सकती हैं। कंपनी भारत में अपनी पॉपुलर ऑल-इलेक्ट्रिक सेडान Tesla Model S को लॉन्च कर सकती है। आइए इसके ऐसी 5 खूबियों के बारे में जानते हैं, जिसकी वजह से यह दुनियाभर में काफी पॉपुलर है।

1. डिजाइन और फ्रंट लुक
टेस्ला ने अपनी Tesla Model S के डिजाइन को बेहद सादा और अट्रैक्टिव बनाया है। इसमें तेज LED हेडलाइट्स और LED DRLs दिए गए हैं। इसमें पूरी तरह से बंद ग्रिल दी गई है। इसकी ऊंचाई कम रखी गई है, ताकि वाहन की स्थिरता बढ़ सके, खासकर ज्यादा स्पीड पर।

2. साइड प्रोफाइल
Tesla Model S के साइड प्रोफाइल काफी बेहतरीन और एयरोडायनामिक लुक दिया गया है। इसमें ब्लैक फिनिश फ्लश टाइप डोर हैंडल्स और 19 इंच के एयरोडायनामिक डिजाइन किए गए अलॉय व्हील्स लगाए गए हैं। इसमें 21 इंच के व्हील्स को ऑप्शन रूप में चुनने के लिए मिलते हैं। इसका हाई वेरिएंट प्लेड में सभी व्हील्स पर रेड ब्रेक कॉलिपर्स मिलते हैं। इसे कुल 6 कलर ऑप्शन स्टील ग्रे, पर्ल व्हाइट मल्टी-कोट, डीप ब्लू मेटैलिक, सॉलिड ब्लैक, अल्ट्रा रेड और लूनर सिल्वर में पेश किया जाता है।

3. रियर डिजाइन

Tesla Model S के रियर में रैपरगंड LED टेल लाइट्स और ब्लैक बम्पर दिया गया है। इसमें एक्स्ट्रा फिटमेंट के रूप में कार्बन फाइबर लिप स्पॉइलर भी दिया गया है।

4. इंटीरियर और फीचर्स
टेस्ला की इस इलेक्ट्रिक कार में बड़ी सी 17 इंच की स्क्रीन दी गई है। इसमें स्टीयरिंग व्हील को 3-स्पोक से बदलकर F1 जैसे योक स्टीयरिंग व्हील में भी अपग्रेड किया जा सकता है। इसके अलावा, 12.3 इंच का डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले, 9.4 इंच का स्क्रीन रियर पैसेंजर्स के लिए और 22 स्पीकर वाली साउंड सिस्टम के साथ एक्टिव नॉइज कैंसलेशन जैसे फीचर्स मिलते हैं। इसमें पैसेंजर की सेफ्टी के लिए 360 डिग्री कैमरा, पार्किंग असिस्ट, लेन डिपार्चर वॉनिंग, और फॉरवर्ड कोलिशन वॉनिंग जैसे फीचर्स को लैस किया गया है। यह ऑटोमेटिक रूप से ड्राइव करने के फीचर के साथ आती है, जिसमें ब्रेक, एक्सीलेरेशन और स्टीयरिंग को ऑटोमेटिक तरीके से कंट्रोल होते हैं।

5. पावरट्रेन और परफॉर्मेंस इलेक्ट्रिक मोटर की संख्या	टॉर्क N/A 1,034 PS एक्सीलेरेशन (0-100)
2	
3	

3.1 सेकंड
1.99 सेकंड
क्लेम रेंज (EPA)
611 km
502 km
Tesla Model S को दो वेरिएंट ऑल व्हील ड्राइव और प्लेड में पेश किया जाता है। प्लेड वेरिएंट 1,034 PS तक का पावर जनरेट कर सकता है। यह वेरिएंट महज 0 से 100 किमी/घंटा की रफ्तार सिर्फ 2 सेकंड्स पकड़ सकती है और इसकी टॉप स्पीड 320 किमी/घंटा तक ले जाया जा सकता है।

6. कीमत
अगर भारतीय बाजार में Tesla Model S लॉन्च होती है, तो इसकी एक्स-शोरूम कीमत 1.50 करोड़ रुपये के आसपास हो सकती है। भारत में इसका मुकाबला Audi e-tron GT, Porsche Taycan, BMW i5 और Mercedes-Benz EQS से देखने के लिए मिलेगा।

2025 होंडा एक्टिवा 110 वर्सेज एक्टिवा 125: इन दोनों स्कूटर्स में कितना अंतर ?

होंडा ने 2025 Activa 110 और Activa 125 को अपडेट किया है जिनमें OBD-2B इंजन नए रंग और फीचर अपडेट्स को शामिल किया गया है। दोनों ही स्कूटर में एलईडी लाइटिंग TFT डिस्प्ले और स्मार्टफोन कनेक्टिविटी जैसे फीचर्स मिलते हैं। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको दोनों (2025 Honda Activa 110 Vs Activa 125) के बीच में क्या अंतर है इसके बारे में बता रहे हैं।

नई दिल्ली। होंडा टू-व्हीलर्स ने हाल ही में अपनी सबसे पॉपुलर स्कूटर Activa 110 और Activa 125 को भारत में अपडेट किया है। इन दोनों ही स्कूटर को नए कलर, फीचर अपडेट्स और OBD-2B कंप्लाइंट इंजन जैसे बदलाव किए गए हैं। हम यहां पर आपको 2025 Honda Activa 110 और Activa 125 में क्या अंतर है, इसके बारे में बता रहे हैं।

1. कीमत और वेरिएंट्स
Activa 110: इसे तीन वेरिएंट में पेश किया जाता है, जो स्टैंडर्ड (80,950 रुपये), डिलक्स (90,469 रुपये), और H-smart (94,471 रुपये) है। इसे 6 कलर ऑप्शन में ऑफर किया जाता है, जो Pearl Precious White, Decent Blue Metallic, Pearl Igneous Black, Mat Axis Gray Metallic, Rebel Red Metallic,

और Pearl Siren Blue है।
Activa 125: इसे दो वेरिएंट में पेश किया जाता है, जो स्टैंडर्ड (95,140 रुपये) और H-smart (99,146 रुपये) है। इसे भी 6 कलर ऑप्शन Pearl Igneous Black, Matt Axis Gray Metallic, Pearl Deep Ground Gray, Pearl Siren Blue, Rebel Red Metallic, और Pearl Precious White में ऑफर किया जाता है।

3. डिजाइन
Activa 110 का डिजाइन पहले की तरह ही है, केवल अब इसके सभी वेरिएंट में अलॉय व्हील्स दिए गए हैं। वहीं, Activa 125 का डिजाइन कुछ अलग है। इसमें नया हेडलाइट और टेल लैंप दिए गए हैं और इसके बॉडी पैनल्स पर क्रोम फिनिश दिया गया है, जिसकी वजह से इसे प्रीमियम लुक मिलता है। इसके साइड पैनल्स भी थोड़े मोटे हैं और इसमें शार्प ग्रेब रेल दी गई है।

4. इंजन
Activa 110 में 109.51cc का एयर-कूल्ड, सिंगल-सिलेंडर इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 7.99PS की पावर और 9.05Nm का टॉर्क जनरेट करता है। वहीं, Activa 125 में 123.92cc का एयर-कूल्ड, सिंगल-सिलेंडर इंजन दिया गया है, जो 8.4PS की पावर और 10.5Nm का टॉर्क जनरेट करता है।
दोनों ही स्कूटर में OBD-2B कंप्लाइंट इंजन दिया गया है। दोनों में ही स्टॉप-स्टार्ट टेक्नोलॉजी मिलती है। इससे ट्रैफिक में खड़े रहने पर इंजन अपने आप ही बंद हो जाता है

5. अंडरपिनिंग
Activa 110 के स्टैंडर्ड वेरिएंट में स्टील रिम्स मिलते हैं, जबकि डीलक्स और H-smart वेरिएंट में अलॉय व्हील दिए जाते हैं। वहीं, Activa 125 के दोनों वेरिएंट में अलॉय व्हील्स दिए गए हैं। Activa 125 में 190mm का फ्रंट डिस्क ब्रेक और 130mm का रियर ड्रम ब्रेक मिलता है, जबकि Activa 110 में दोनों सिरों पर ड्रम ब्रेक्स दिए गए हैं।

दोनों में ही कम्बाइंड ब्रेकिंग सिस्टम (CBS) दिया जाता है।
फीचर्स और समानताएं
दोनों ही स्कूटर में एलईडी लाइटिंग सेटअप, 4.3-इंच TFT डिस्प्ले, स्मार्टफोन कनेक्टिविटी, कॉल/SMS अलर्ट्स, और टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन जैसे फीचर्स मिलते हैं, जो Honda RoadSync ऐप के जरिए काम करती है।
दोनों में ही यूएसबी टाइप-C चार्जिंग पोर्ट और माइलेज इंडिकेटर भी मिलता है। हालांकि, F1T कंसोल Activa

125 के सभी वेरिएंट्स में मिलता है, जबकि Activa 110 में यह केवल मिड-स्पेक और टॉप-एंड वेरिएंट में ही दी जाती है।
दोनों ही स्कूटर में ही साइलेंट स्टार्ट मोटर, साइड-स्टैंड इंजन कट-ऑफ, कोलेस इग्निशन, एंटी-थेफ्ट इंजन इमोबिलाइजर, और फाईड-मी लैम्प्स जैसे फीचर्स को लैस किया गया है। इनके हाई वेरिएंट में इंजन इमोबिलाइजर और एंटी-थेफ्ट टेक्नोलॉजी को दिया जाता है।

जियोमी ने पेश की अपनी दूसरी इलेक्ट्रिक कार YU7, स्टाइलिश लुक के साथ कई सेंसर से है लैस



स्मार्टफोन बनाने वाली कंपनी शाओमी ने अपनी दूसरी इलेक्ट्रिक कार Xiaomi YU7 को पेश किया है। यह एक इलेक्ट्रिक SUV है। इसे काफी स्टाइलिश लुक के साथ ही बेहतरीन स्पेसिफिकेशन के साथ लेकर आया गया है। साथ ही इसमें कई सेंसर भी मिलेंगे जो आपकी ड्राइविंग को और बेहतर बना देंगे। इसे कंपनी 2025 के जून-जुलाई महीने में लॉन्च कर सकती है।

नई दिल्ली। स्मार्टफोन और कंज्युमर इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में अपनी धाक जमा चुकी Xiaomi अब ऑटोमोटिव इंडस्ट्री में भी कदम रख दिया है। हाल ही में कंपनी ने अपनी दूसरी इलेक्ट्रिक SUV Xiaomi YU7 का टीजर जारी किया है। कंपनी ने इसे अपनी पहली इलेक्ट्रिक कार के काफी बेहतर डिजाइन और एडवांस फीचर्स के साथ लेकर आई है। आइए Xiaomi YU7 के बारे में विस्तार से जानते हैं।

डिजाइन और आकार
Xiaomi YU7 एक बड़ी इलेक्ट्रिक SUV है, इसकी लंबाई 4,999 मिमी, चौड़ाई 1,996 मिमी और ऊंचाई 1,608 मिमी है। इसका व्हीलबेस 3,000 मिमी है। इसका डिजाइन काफी हद तक YU7 SU7 की तरह ही है, लेकिन इसमें कुछ नई और अट्रैक्टिव स्पेसिफिकेशन को जोड़ा गया है। इसे स्लीक और बुलेबस बॉडी डिजाइन दिया गया है, जो आकर्षक LED हेडलाइट्स और

LED DRL सिगनेचर के साथ आता है। इस इलेक्ट्रिक कार के चारों तरफ लॉस ब्लैक एलिमेंट्स और एक डिलचस्प व्हील आर्च क्लैडिंग दी गई है, जो इसके लुक को काफी स्टाइलिश बनाते हैं। कंपनी इसमें 26 व्हील डिजाइन के को काफी स्टाइलिश बनाते हैं। कंपनी इसमें 26 व्हील डिजाइन के को काफी स्टाइलिश बनाते हैं।

पावरट्रेन और परफॉर्मेंस
Xiaomi YU7 में कई पावरट्रेन ऑप्शन देखने के लिए मिलेंगे। अभी तक इसके बैटरी साइज के बारे में कंपनी की तरफ से कोई जानकारी नहीं दी गई है, लेकिन यह परफॉर्मेंस के मामले में अपने प्रतिद्वंद्वियों से काफी बेहतर होने की उम्मीद है। मिली जानकारी के मुताबिक, इसका बेस वेरिएंट में सिंगल इलेक्ट्रिक मोटर होगा, जो 315 bhp की पावर जनरेट करेगा। यह रियर एक्सल

पर स्थित होगी। वहीं, इसका टॉप वेरिएंट में दो इलेक्ट्रिक मोटर देखने के लिए मिल सकते हैं, जो 681 bhp की पावर जनरेट करेगा।

फीचर्स और सेंसर
Xiaomi YU7 में एक रूफ माउंटेड बलब देखने के लिए मिल सकता है, जिसके LiDAR और अन्य सेंसर से लैस होने की उम्मीद है। इसका प्रोफाइल काफी मजबूत और आकर्षक दिख रहा है और इसका डिजाइन इसे प्रीमियम और स्टाइलिश कार बनाता है।

कीमत और लॉन्च
Xiaomi YU7 की संभावित शुरुआती कीमत CNY 300K (लगभग 34 लाख रुपये) तक हो सकती है। इसके लॉन्च होने की उम्मीद जून या जुलाई 2025 में है। वहीं, हाल ही में कंपनी के Xiaomi SU7 EV ने NCAP के क्रैश टेस्ट में 5 स्टार सेफ्टी रेटिंग हासिल की है।

मार्केट में तहलका मचाएगी बीएमडब्ल्यू की ये नई बाइक; मिला स्टाइल, परफॉर्मेंस और फीचर्स का बेस्ट कॉम्बो



परिवहन विशेष न्यूज

विराम लगा दिया है। आइए जानते हैं कि BMW R 12 G/S कितनी दमदार स्कैम्बलर मोटरसाइकिल है और यह भारत में कम लॉन्च हो सकती है।

डिजाइन और फीचर्स
BMW R 12 G/S को काफी आकर्षक और मजबूत डिजाइन दिया गया है, जो इसकी ऑफ-रोड कैपेसिटी को और भी बेहतर कर देता है। इसमें मिनिमम बॉडी वर्क और हाई ग्राउंड क्लियरेंस दी गई है। बाइक में पूरी तरह से एडजस्टेबल USD फोर्क दिया गया है। इसके आगे की तरफ 200mm के ट्रैवल और पीछे 210mm ट्रैवल वाला मोनोशॉक सस्पेंशन दिया गया है।

BMW R 12 G/S
इसमें 21 इंच के फ्रंट और 17 इंच के रियर स्कैम्बलर मोटरसाइकिल R 12 G/S को ग्लोबल बाजार में पेश किया है। इसे R 12 nineT के आधार पर बनाया गया है। इतना ही नहीं, इसमें उसकी इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो R 12 nineT में किया जाता है। इस बाइक के पेश होने से पहले इसकी कई लोक और अफवाहें सामने आ रही थी, लेकिन अब कंपनी ने इसे पेश करके इन चीजों को पूरी तरह से

हो स्टैंडर्ड रेन, रोड और एंड्यूरेंस मोड्स के साथ ऑफ-रोडिंग के लिए स्पेशल मोड भी दिया गया है।

इंजन और परफॉर्मेंस
BMW R 12 G/S में 1,170cc, एयर/ऑयल-कूल्ड बॉक्सर इंजन का इस्तेमाल किया गया है। यह इंजन 109hp की पावर और 115Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसका इंजन शहर की सड़कों पर हो या ऑफ-रोड ट्रैक पर हर जगह पर शानदार ड्राइविंग अनुभव देने का वादा करता है।

ब्रेकिंग और इलेक्ट्रॉनिक फीचर्स
इसमें ब्रेकिंग के लिए टिविन 310mm डिस्क के साथ फ्रंट में Axial-mounted कैलिपर्स दिए गए हैं और रियर में 265mm का रोटार दिया गया है। इसके साथ ही इसमें ट्रैक्शन कंट्रोल, कॉर्निंग ABS, इंजन ब्रेकिंग कंट्रोल, कीलेस इग्निशन और LED हेडलाइट्स जैसे फीचर्स मिलते हैं।

भारत में लॉन्च की संभावना
BMW ने अभी तक R 12 G/S के भारत में लॉन्च के बारे में कोई आधिकारिक घोषणा नहीं की है, लेकिन यह इस साल के अंत तक भारतीय बाजार में लॉन्च हो सकती है।

चुनौतीपूर्ण बच्चों के जीवन में स्कूल का महत्व



विजय गर्ग

पुराने दिनों में बच्चे खेलने और मिट्टी में लोटने के बाद घर आते थे, भरपेट खाना खाते थे और चैन की नींद सो जाते थे, लेकिन आजकल यह पूरा घटनाक्रम उलट गया है। अब बच्चे बाहर खेलने नहीं जाते, और अगर जाते भी हैं तो उनकी माताएं कहती हैं, रतुम्हारे कपड़े कौन धोएगा?र अगर वे थोड़े गंदे हो जाएं। इस डर के कारण आधे बच्चे खेलते नहीं हैं। आजकल लोग अपने बच्चों की अपेक्षा दूसरों की अधिक चिंता करते हैं।



आजकल यह पूरा घटनाक्रम उलट गया है। अब बच्चे बाहर खेलने नहीं जाते, और अगर जाते भी हैं तो उनकी माताएं कहती हैं, रतुम्हारे कपड़े कौन धोएगा?र अगर वे थोड़े गंदे हो जाएं। इस डर के कारण आधे बच्चे खेलते नहीं हैं। आजकल लोग अपने बच्चों की अपेक्षा दूसरों की अधिक चिंता करते हैं। अगर कोई बच्चा शादी में जाता है तो हम सब कहते हैं, रेबेटा, ध्यान से खाना, लोग क्या कहेंगे?र चुपचाप न बैठें, वरना आपके कपड़े गंदे हो जाएंगे। हमारी सोच की भी एक सीमा होती है, कि हम एक नन्हीं सी आत्मा से कितना संघर्ष

करवाते हैं। हमारी इस आदत के कारण बच्चे का बचपन बर्बाद हो जाता है, उसका बचपन जाते भी हैं तो उनकी माताएं कहती हैं, रतुम्हारे कपड़े कौन धोएगा?र अगर वे थोड़े गंदे हो जाएं। इस डर के कारण आधे बच्चे खेलते नहीं हैं। आजकल लोग अपने बच्चों की अपेक्षा दूसरों की अधिक चिंता करते हैं। अगर कोई बच्चा शादी में जाता है तो हम सब कहते हैं, रेबेटा, ध्यान से खाना, लोग क्या कहेंगे?र चुपचाप न बैठें, वरना आपके कपड़े गंदे हो जाएंगे। हमारी सोच की भी एक सीमा होती है, कि हम एक नन्हीं सी आत्मा से कितना संघर्ष

कभी-कभी माता-पिता दूसरों को यह साबित करने में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि उनका बच्चा बहुत शांत है और जरा सी शरारत पर इतना क्रोधित हो जाते हैं कि वे बच्चे को दूसरों के सामने डांटते हैं और कभी-कभी उसकी पिटाई भी कर देते हैं। माता-पिता को ऐसा महसूस होता है जैसे उनकी गरिमा के ठेस पहुंचाई जा रही है। वे यह नहीं समझते कि बच्चों की शरारतें, खेलना, चीजों को तोड़ना-जोड़ना उनके बचपन का ही एक हिस्सा है। उसका चंचल मन कई नियमों और प्रतिबंधों को स्वीकार नहीं करता। वह सही उम्र में ही

इस बात को समझ पाता है।
एक बच्चा डर के मारे झूठ बोलता है।
कभी-कभी हम अपने बच्चों को ऐसी बातें भी सिखाते हैं जो बाद में उनके व्यक्तित्व को खराब कर देती हैं, जैसे झूठ बोलना। हम बच्चों को अपने स्वार्थ के लिए झूठ बोलना सिखाते हैं, अर्थात यदि बच्चा इस पर सवाल उठाता है, तो हम कहते हैं, रचुप रहो, तुम मुझसे ज्यादा जानते हो।र बच्चा डर के मारे झूठ बोलता है। उसे लगता है कि शायद सच बोलना अच्छी बात नहीं है, इसीलिए उसे झूठ बोलना सिखाया जा रहा है, लेकिन जब वह बड़ा

होकर अपने माता-पिता से झूठ बोलना शुरू करता है तो यह उनके लिए परेशानी का सबब बन जाता है। फिर वे यह भूल जाते हैं कि उन्होंने ही बचपन में अपने बच्चे के दिल में इसकी नींव रखी थी, जिसका अब नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

संयुक्त परिवारों का ह्रास पहले परिवार बड़े हुआ करते थे और संयुक्त परिवारों में बच्चे बहुत कुछ सीखते थे और खुशनुमा माहौल के कारण बीमार होने की संभावना भी कम होती थी, लेकिन आज अकेलेपन के कारण बच्चे मानसिक बीमारियों से ग्रस्त हो जाते हैं और अवसाद से बचने के लिए मोबाइल फोन का सहारा लेते हैं। अतीत में संयुक्त परिवारों में दादा-दादी, चाचा-चाची सभी मिलकर बच्चों को बहुत कुछ सिखाते थे और बच्चे कभी निराश नहीं होते थे, क्योंकि वे हंसते-खेलते थे। बच्चों चिंता मत करो.

हमें अपनी फिजुलखर्ची के कारण अपने बच्चों को चिंतित नहीं करना चाहिए। हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम उनके लिए खुशहाल माहौल बनाएं और उन्हें जीवन के हर पल की सराहना करना सिखाएं, क्योंकि बचपन का यह समय दोबारा नहीं आता। यह समय हमारे भविष्य के लिए दोस आधार तैयार करता है। आइए हम इस बात की चिंता करना छोड़ दें कि लोग क्या कहेंगे और अपने बच्चों के साथ अधिक समय बिताएं, तथा उनकी खुशियों में भागीदार बनकर तनाव और चिंता को दूर भागाएं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार मलोत पंजाब

खेलों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी

विजय गर्ग

"मैं हमेशा ये सोच के रोता रहा कि छोरा होता तो देश के लिये गोल्ड लाता। ये बात मेरे समझ में न आई कि गोल्ड तो गोल्ड होता है, छोरा लावे या छोरी।" साल 2016 में आई अमिर खान की फिल्म 'दंगल' का ये डायलॉग तो हम सभी ने सुना ही होगा। ये महज एक फिल्म का डायलॉग भर नहीं है जिसका आनंद लिया और छोड़कर आगे बढ़ गए, बल्कि ये बहुत गहरी बात है जिसे आज तक हमारा भारतीय समाज पूरी तरह से आत्मसात नहीं कर पाया है। जी हाँ, लिंग समानता को लेकर हम कितनी भी बड़ी-बड़ी बातें क्यों न कर लें, लेकिन वास्तविकता यह है कि आज भी भारत में लिंग असमानता बड़े पैमाने पर है जिसका एक ज्ञाता जागता उदाहरण खेल की दुनिया है। वैसे भी खेलों को लेकर भारत का रवैया हमेशा से सुस्ती भरा रहा है, उसमें भी महिलाओं को प्रोत्साहन मिलना तो बहुत दूर की बात है। ऐसे में पर्याप्त समर्थन के अभाव व सामाजिक वर्जनाओं को तोड़कर अपना परचम लहराने वाली मैरी कॉम, विनेश फोगाट, बबिता फोगाट, मानसी जोशी, दुति चंद, पी.वी सिंधु, हिमा दास जैसी महिला खिलाड़ियों को भूला नहीं जा सकता है। आज हम इस लेख में, अपनी प्रतिभा से खेल की दुनिया और समाज में मिसाल बनीं इन महिला खिलाड़ियों के बारे में तो जानेंगे ही, साथ ही यह भी जानेंगे कि आखिर इस क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी तुलनात्मक रूप से कम होने की क्या वजह है; क्यों आज भी अधिकाँश घरों के लोग अपनी बेटियों को खेल के क्षेत्र में करियर बनाने का समर्थन नहीं करते।

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेलों में पुरुषों के वर्चस्व को चुनौती दे रही इन महिला खिलाड़ियों के संघर्ष की दास्तां सुनकर आप भी यह कहने को मजबूर हो जाएंगे कि "म्हारी छोरियाँ छोरों से कम हैं के"।

हिमा दास– हिंग एक्सप्रेस के नाम से मशहूर

हिमा दास का जन्म 9 जनवरी 2000 को असम के नगांव जिले के ढिंग गाँव में हुआ था। उनके परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। उनके पिता के पास मात्र दो बीघा जमीन थी जिस पर खेती करके वह आजीविका चलाते थे। शुरू में हिमा अपने धान के खेतों में ही अभ्यास करती थीं। पैसी की कमी की वजह से उनके पास अच्छे जूते भी नहीं थे। हिमा फुटबॉल में स्ट्राइकर बनना चाहती थीं। एक दिन उनके दौड़ने की क्षमता देखकर किसी ने उन्हें एनकेलिट बनने की सलाह दी और यहीं से शुरू हुआ उनके एथलीट बनने का सफर। बता दें कि, हिमा ट्रैक स्पर्धा में विश्व स्तर पर गोल्ड जीतने वाली पहली भारतीय खिलाड़ी हैं। हिमा के जन्मे और प्रदर्शन को देखते हुए असम पुलिस में उन्हें उप अधीक्षक (डीएसपी) बनाया गया है। हिमा दास ने कई प्रतियोगिताओं में स्वर्ण पदक जीता है।

मैरी कॉम– बॉक्सर मैरीकॉम का जन्म 1 मार्च 1983 को भारत के पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर के एक छोटे से गाँव में हुआ था। उनका बचपन भी बहुत गरीबी में गुजरा। बॉक्सिंग शुरू करने के बाद मैरी को पता था कि उनका परिवार उनके बॉक्सिंग में करियर बनाने के विचार को कभी नहीं मानेगा, जिस वजह से उन्होंने इस बात को अपने परिवार से छिपाकर रखा था। साल 1998 से 2000 तक वे अपने घर में बिना बताये इसकी ट्रेनिंग लेती रहीं। सन 2000 में जब मैरी ने मणिपुर में 'बीमेन बॉक्सिंग चैम्पियनशिप' में जीत हासिल की, और उन्हें बॉक्सर का अवार्ड मिला तब परिवार को उनके बॉक्सर होने का पता चला। बड़ी बात यह है कि, भारत में जहाँ शादी और बच्चों के बाद महिला खिलाड़ी का करियर खत्म माना जाता है, ऐसे में मैरीकॉम ने माँ बनने के बाद भी खेलना नहीं छोड़ा। तीन बच्चों की माँ बनने के बाद भी मैरीकॉम ने वर्ल्ड चैंपियनशिप जीती। वह दुनिया की एकमात्र बॉक्सर हैं जिन्होंने कुल आठ वर्ल्ड चैंपियनशिप में मेडल जीते हैं।

विनेश फोगाट

विनेश फोगाट का जन्म 25 अगस्त 1994 को भारत के हरियाणा राज्य में हुआ था, जो कि भारत के सबसे कम लिंगानुपात वाले राज्यों में से एक है। जब विनेश ने अपने गाँव में कुश्ती का अभ्यास शुरू किया तो लड़कों का खेल समझे जाने वाले खेल पहलवानी चुनने और कपड़ों की च्वाइस के लिये विनेश को बहुत कुछ झेलना पड़ा, लेकिन विनेश ने हार नहीं मानी और इस यात्रा में पिता के बाद उनका साथ उनके ताऊ ने दिया। खेल की इस दुनिया में विनेश ने वर्ल्ड चैंपियनशिप में कांस्य पदक और कॉमनवेल्थ गेम्स में स्वर्ण पदक जीतकर तिरंगे की शान बढ़ाई है। यह भी जानना जरूरी है कि, विनेश वर्ल्ड चैंपियनशिप में दो पदक जीतने वाले देश की पहली महिला पहलवान हैं।

दुति चंद– विनेश फोगाट जैसी खिलाड़ियों ने जहाँ पुरुष प्रधान मानसिकता को चुनौती दी, वहीं दुति चंद ने गरीबी और जेंडर के इर्द-गिर्द बनी रुढ़ियों को तोड़ा। दुति का जन्म 3 फरवरी 1996 को उड़ीसा राज्य के जाजपुर जिले में हुआ था। इनके पिता एक बुनकर थे। इनकी माँ भी बुनकर का काम करती थीं। घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी लेकिन दुति की मेहनत को देखते हुए उनके घर और गाँव वाले सभी को यकीन था कि एक दिन वह बहुत आगे तक जाएँगी। एक कहावत 'होनहार होती है चिकन ने पात' दुति पर पूरी तरह से लागू होती है। इतना ही नहीं, दुति को खेल में भाग लेने के लिये भी कानूनी लड़ाई लड़नी पड़ी थी, लेकिन दुति ने यह लड़ाई भी जीती। आज दुति भारत की सबसे तेज भागने वाली एथलीट्स में से हैं।

पी.वी सिंधु– तेलंगाना में रहने वाली पीवी सिंधु भारत की पहली बैडमिंटन खिलाड़ी हैं जिन्होंने सिर्फ 21 साल की उम्र में रियो ओलंपिक



में रजत पदक जीता है। वह दुनिया के टॉप-10 खिलाड़ियों में से हैं। महिला हो या पुरुष, सिंधु से पहले किसी भी भारतीय खिलाड़ी ने वर्ल्ड बैडमिंटन चैंपियनशिप नहीं जीती है।

खेलों में कितनी है महिलाओं की भागीदारी?

आँकड़ों की बात करें तो राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बीते पाँच वर्षों में महिला खिलाड़ियों की संख्या में काफी इज़ाफा देखने को मिला है। खेल मंत्रालय की एक रिपोर्ट के मुताबिक, वर्ष 2018 से 2020 की अवधि में खेलो इंडिया गेम्स में महिला खिलाड़ियों की भागीदारी में कुल 160 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। वहीं, ओलंपिक डेटाबेस के अनुसार, साल 2000 में ओलंपिक खेलों में कुल 38 फीसदी महिलाओं की भागीदारी देखी गई थी, जो कि साल 2016 में बढ़कर 45 फीसदी और साल 2020 में 47 फीसदी हो गई।

आखिर खेल में क्यों कम है महिलाओं की भागीदारी?

खेल में महिलाओं की पर्याप्त संख्या में भागीदारी न होने के कुछ कारण ये हो सकते हैं–

एक रिसर्च के दौरान लोगों ने बताया कि स्कूलों द्वारा खेल पर जोर न दिया जाना व सुविधाओं का अभाव इसकी बड़ी वजह हैं।

महिलाओं को रोज़मर्रा के आधार पर लिंगवाद के कई मुद्दों का सामना करना पड़ता है, चाहे वह कार्यस्थल हो या घर। उनके पहनावे, उनकी बातचीत व व्यवहार की निगरानी की जाती है और उसी आधार पर उनका आंकलन किया जाता है।

अधिकतर लोगों का मानना है कि महिला एथलीटों को मातुत्व और खेल करियर के बीच संतुलन स्थापित करने में

चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा, पुरुष खिलाड़ियों की तुलना में महिला खिलाड़ियों को कम धन मिलता है, जिससे उनके लिये प्रतिस्पर्द्धा करना एवं लंबे समय तक खेल में लिप्त रहना मुश्किल हो जाता है।

खेल जगत में महिलाओं के अथक प्रयासों के बावजूद उन्हें अपने पुरुष समकक्षों की तुलना में बराबर सम्मान या मान्यता प्राप्त नहीं होती है।

कई बार कोई सुरक्षित विकल्प न होने के कारण अन्य परिवारों के साथ कार्पूलिंग जैसी परिस्थिति या लड़की के पास परिवार के साथ घर पर रहने के अलावा अन्य कोई विकल्प नहीं होता है।

हाल की प्रगति के बावजूद महिला एथलीटों के साथ वास्तविक या कथित यौन अभिविन्यास और लिंग पहचान के आधार पर भेदभाव बना हुआ है।

प्रशिक्षित एवं गुणवत्तायुक्त कोच की अनुपस्थिति भी एक बड़ा कारण है। कई बार कोच उन लड़कों के प्रशिक्षण पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं, जिनके पास प्रशिक्षण हेतु धन अधिक होता है।

महिला खेलों को अक्सर मीडिया में कम

दिखाया जाता है, जिससे महिला एथलीटों के लिये पहचान और प्रायोजन के अवसर प्राप्त करना कठिन हो जाता है।

सुझाव

खेलों में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिये सबसे ज्यादा जरूरी है कि उन्हें उनके परिवार का साथ मिले।

इसके अलावा, राज्य सरकारों को खेलों में भाग लेने से संबंधित सेमिनार और शिविरों का आयोजन करवाना चाहिये ताकि महिलाओं के साथ-साथ उनके परिवार भी खेलों के प्रति जागरूक हों।

योजनाओं को थोड़ा और बेहतर तरीके से लागू किया जाए ताकि सभी जरूरतमंदों को उनका लाभ मिल सके।

खिलाड़ी महिलाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करने के साथ-साथ खेल से जुड़ी सुविधाएँ उपलब्ध करवाए जाने की आवश्यकता है। स्थानीय स्तर पर महिलाओं के लिये विभिन्न खेल प्रतियोगिताएँ आयोजित करवाई जानी चाहिये ताकि अच्छी खिलाड़ियों की पहचान हो सके और उनकी प्रतिभा को निखारा जा सके।

अंत में हम कह सकते हैं कि ओलंपिक और पैरालम्पिक में भारतीय महिलाओं का शानदार प्रदर्शन इस बात की ओर संकेत दे रहा है कि बदलाव की लहर चल पड़ी है जो दूर तक जाएगी। व्यावहारिक और सामाजिक बदलाव ही महिलाओं के आगे आने के द्वार खोलेंगा। जैसे-जैसे महिलाएँ शिक्षा, करियर और अपनी ज़िंदगी के फ़ैसले स्वयं लेने में सक्षम होती जाएंगी, वैसे-वैसे लोग भी इसे स्वीकार करने लगेंगे और खेल जैसे क्षेत्रों में भी उनकी भागीदारी बढ़ती जाएगी। संक्षेप में कहें तो हम सभी को अपनी परंपरागत सोच से बाहर निकलना होगा और यह स्वीकार करना होगा कि ‘‘मेडलिस्ट पेड़ पर नहीं उगते, उन्हें बनाना पड़ता है, प्यार से और लगन से।’’

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोत पंजाब

आज से साढ़े तीन-चार दशक पहले तक स्थिति इतनी भयावह नहीं थी। तब सड़कों पर दौड़ने वाले वाहनों की संख्या काफी कम थी। हवा में मौजूद जहर को सोखने के लिए हमारे पास पर्याप्त मात्रा में पेड़ भी थे। लेकिन पिछले कुछ दशकों में स्थितियां बहुत तेजी से बदलीं। सड़कों पर गाड़ियों की भरमार हो गई और विकास की अंधी दौड़ में पेड़ों की अंधाधुंध काटकर हमने उस सहारे को खुद से ही छीन लिया जो न केवल हमें तेज धूप में छाया दिया करता था बल्कि पर्यावरण संरक्षण की आश्वस्त भी देता था।

विजय गर्ग

हवा में घुलने वाला जहर उस जहरीले धुएं का परिणाम होता है, जो धुआं वाहनों से- कारखानों से और पटाखों से उत्सर्जित होता है। इस धुएं में शामिल कार्बन मोनो ऑक्साइड, सल्फर डाईऑक्साइड, नाइट्रोजन डाईऑक्साइड जैसी गैसों और सीसे के कण वातावरण को जहरीला कर देते हैं। ये जहर बच्चों और बुजुर्गों पर सर्वाधिक प्रभाव डालता है।

हवा में घुलने वाला जहर उस जहरीले धुएं का परिणाम होता है, जो धुआं वाहनों से- कारखानों से और पटाखों से उत्सर्जित होता है। इस धुएं में शामिल कार्बन मोनो ऑक्साइड, सल्फर डाईऑक्साइड, नाइट्रोजन डाईऑक्साइड जैसी गैसों और सीसे के कण वातावरण को जहरीला कर देते हैं। ये जहर बच्चों और बुजुर्गों पर सर्वाधिक प्रभाव डालता है।

राजधानी दिल्ली की हवा में घुले जहर ने एक बार फिर लोगों का जीना मुहाल कर दिया है। राजधानियों की हवा में जहर की बात आमतौर पर मुहावरे में की जाती है, लेकिन दिल्ली और उसके आसपास के इलाकों, शहरों में रहने वाले लोग सचमुच दमधौंड़ हवा में सांस लेने को विवश हैं। सड़क पर बेतहाशा दौड़ रहे वाहन और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के आसपास के इलाके के खेतों में जलाई जाने वाली पराली के धुएं ने सांस लेना दुश्पर कर दिया है। रही-सही कसर दीपावली पर हुई आतिशबाजी के धूम-धड़ाके ने पूरी कर दी। दिल्ली ही क्या, देश के अधिकांश शहरों की हवा में प्रदूषण की मात्रा दीवाली के दिनों में खतरनाक स्तर पर पहुंच जाती है। उदाहरण के लिए राजस्थान के कोटा शहर को लिया जा

सकता है। हर साल करीब दो लाख बच्चे देश के शीर्षस्थ इंजीनियरिंग या मेडिकल कॉलेजों में दाखिले की परीक्षा के लिए कोचिंग लेने के लिए कोटा आते हैं और इन छात्रों की आमद न केोटा को आर्थिक समृद्धि के नवस्रोत मान सोंपे हैं। यों भी बच्चों को देश का भविष्य कहा जाता है और जिस इलाके में इतनी बड़ी संख्या में बच्चे रहते हों, उस इलाके के पर्यावरण संरक्षण के प्रति सामान्य जन को भी अतिरिक्त रूप से संवेदनशील होना चाहिए। शहर के एक अस्थमा विशेषज्ञ ने दीवाली की रात कोटा की हवा में प्रदूषण की पड़ताल की तो पाया कि वहां की हवा में जहरीले कणों की मात्रा मानक स्तर से सात गुना अधिक है।

पिछले कुछ सालों में हम अपने स्वभाव से ही नहीं, अपने व्यवहार से भी हवा में जहर घोलने के आदी हो चुके हैं। वायु प्रदूषण की भयावहता का अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूटीओ) वायु प्रदूषण को ‘ग्लोबल हेल्थ इमरजेंसी’ अर्थात जन स्वास्थ्य के लिए आपातकाल कहता है। डब्ल्यूटीओ की एक रिपोर्ट के अनुसार वायु प्रदूषण के कारण हर साल दुनिया में करीब सात करोड़ लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ता है। बर्मिंघम विश्विद्यालय ने अपनी एक शोध के दौरान दुनिया में निमोनिया के कारण होने वाली मौतों और वायु प्रदूषण के मध्य सीधा संबंध पाया। लंदन के किंग्स कॉलेज के एक अध्ययन में पाया गया कि वायु प्रदूषण युवाओं में कई मनोविकृतियों को जन्म देता है। सामान्य तौर पर माना जाता है कि वायु प्रदूषण के कारण मनुष्य के फेफड़ों पर बुरा असर पड़ता है, लेकिन वैज्ञानिकों ने पाया है कि वायु प्रदूषण शरीर के हर अंग पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। जहरीली हवाओं का

असर फेफड़ों में समा कर समस्त कोशिकाओं को प्रभावित करता है।

वायु प्रदूषण के कारण व्यक्ति में तनाव पैदा करने वाले हार्मोनो का स्तर बढ़ जाता है और वह अवसाद का शिकार हो सकता है। बुजुर्गों में समझने की क्षमता में गिरावट संबंधी डिमेंशिया रोग हो जाता है। गर्भवती महिलाओं को गर्भपात जैसी समस्याओं का सामना करना होता है, गर्भस्थिशिशु का जन्म समय से पूर्व ही हो जाता है- जिससे उसका शारीरिक और मानसिक विकास प्रभावित होता है। ब्रौकाइटिस, अग्निद्रा, यकृत के कैंसर, प्रजनन क्षमता में कमी, उच्च रक्तचाप, हृदयरोग जैसे कितने ही रोग वायु प्रदूषण के कारण बढ़ रहे हैं। चीन में किए गए एक अध्ययन में तो यह भी पाया गया कि वायु प्रदूषण बच्चों को गणित और भाषा जैसे विषय सीखने पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

वस्तुतः वायु प्रदूषण अपनी चपेट में आने वाले व्यक्ति के जीवन से इस तरह खिलवाड़ करता है कि स्वास्थ्य की दृष्टि से पीढ़ियां प्रभावित होती हैं। शायद यही कारण है कि हमारे पुरखों ने अपने पर्यावरण के संरक्षण को एक जरूरी मुद्दा माना है और वेदों में प्राण कहा गया है। वेदों के अनुसार वायु पिता के समान पालक, बंधु के समान धारक, पोषक और मित्रवत सुख देने वाली है। कहा तो यह भी गया है कि वायु अमरत्व की निधि है, क्योंकि वह हमें जीवन देती है। लेकिन बदलती हुई जीवन शैली ने हमारी परंपरिक मान्यताओं से

खिलवाड़ किया और मानो प्रदूषण ही हमारे लिए तरक्की का पर्याय बन गया।

इस वर्ष भी जब कुछ संवेदनशील लोगों ने वातावरण को प्रहूषण से बचाने के लिए दीवाली के पूर्व पटाखों के संयमित उपयोग की बात की, तो कतिपय लोग तरह-तरह के कुतर्क से आतिशबाजी के समर्थन में उतर आए। कुछ लोगों का तो यहां तक कहना था कि दीवाली पर जो आतिशबाजी प्रारंभ से हो रही है, उसके खिलाफ बोलना वस्तुतः एक सुनियोजित साजिश है। ऐसा कुतर्क देने वाले इस ऐतिहासिक तथ्य को भी बिसरा बैठे कि जिन रामचंद्र की अयोध्या वापसी का संदर्भ दीपावली से जोड़ा जाता है, उनका समय ईसा से करीब साढ़े पांच हजार साल पहले का आंका गया है, जबकि आतिशबाजी की शुरुआत तो सदियों बाद हुई। कुछ लोगों ने इस बार यह भी तर्क दिया कि पटाखे से होने वाले धुएं से वातावरण में मौजूद मच्छर मरते हैं, इसलिए पटाखे तो जी भर कर चलाए जाने चाहिए। ऐसा कहने वाले भूल गए कि वातावरण को जहरीला कर देने से केवल मच्छरों पर ही प्रभाव नहीं पड़ता, पीढ़ियां भी प्रतिकूलताओं का सामना करती हैं।

हवा में घुलने वाला जहर उस जहरीले धुएं का परिणाम होता है, जो धुआं वाहनों से- कारखानों से और पटाखों से उत्सर्जित होता है। इस धुएं में शामिल कार्बन मोनो ऑक्साइड, सल्फर डाईऑक्साइड, नाइट्रोजन डाईऑक्साइड जैसी गैसों और सीसे के कण वातावरण को जहरीला कर देते हैं। ये जहर बच्चों और बुजुर्गों पर सर्वाधिक प्रभाव डालता है। सर्दी के दिनों में वातावरण की आर्द्रता के कारण जहरीले कण जमीन से कुछ ऊपर ही एक ऐसा

आवरण बना लेते हैं कि हवा बहुत बोझिल हो जाती है। दीवाली के दिनों में चूँकि आतिशबाजी के कारण हवा में नुकसानदायक कहे जाने वाले कणों की मात्रा बहुत बढ़ जाती है और वही समय ऋतु परिवर्तन का भी होता है, इसलिए लोगों को ज्यादा परेशानी होती है।

आज से साढ़े तीन-चार दशक पहले तक स्थिति इतनी भयावह नहीं थी। तब सड़कों पर दौड़ने वाले वाहनों की संख्या काफी कम थी। हवा में मौजूद जहर को सोखने के लिए हमारे पास पर्याप्त मात्रा में पेड़ भी थे। लेकिन पिछले कुछ दशकों में स्थितियां बहुत तेजी से बदलीं। सड़कों पर गाड़ियों की भरमार हो गई और विकास की अंधी दौड़ में पेड़ों को अंधाधुंध काटकर हमने उस सहारे को खुद से ही छीन लिया जो न केवल हमें तेज धूप में छाया दिया करता था बल्कि पर्यावरण संरक्षण की आश्वस्त भी देता था। अमेरिका के शिकागो विश्वविद्यालय में भारत में पर्यावरण के बुरे प्रभावों का अध्ययन किया तो चौंकाने वाला तथ्य यह सामने आया कि गंगा के पड़ोसी इलाकों में रहने वालों की औसत उम्र में वायु प्रदूषण के कारण साढ़े तीन से लेकर सात वर्ष तक की कमी हो रही है। स्थिति यह है कि 1998 से 2016 के बीच इस इलाके में प्रदूषण सत्तर फीसद से भी अधिक बढ़ गया है, जबकि देश की चालीस फीसद आबादी भी इसी इलाके में रहती है। ऐसे में आने वाले समय में वायु प्रदूषण के कारण पनपने वाली बीमारियों से ग्रस्त लोगों की संख्या में कितनी वृद्धि होगी, इसका अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन वायु प्रदूषण को ‘ग्लोबल हेल्थ इमरजेंसी’ यों ही नहीं कहता।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोत पंजाब

क्या सचमुच सिमट रही है दामन की प्रतिष्ठा ?

समय के साथ परिधान और समाज की सोच में बदलाव आया है। पहले रदामनर केवल वस्त्र का टुकड़ा नहीं, बल्कि मर्यादा और संस्कृति का प्रतीक माना जाता था। पारंपरिक वस्त्रों—साड़ी, घाघरा, अनारकली—को महिलाओं की गरिमा से जोड़ा जाता था। रदामन की प्रतिष्ठा अब भी बनी हुई है, परंतु उसकी परिभाषा बदल चुकी है। परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। क्या छोटे वस्त्र संस्कारों का ह्रास हैं, या फिर मानसिकता का परिष्करण ? क्या स्त्री का सम्मान उसके पहनावे से तय होना चाहिए, या फिर उसकी बुद्धिमत्ता, शिक्षा और आत्मनिर्भरता अधिक महत्वपूर्ण हैं ?

प्रियंका सौरभ

समय की करवटों ने जब फैशन के रेशों को बुना, तब परिधान भी परिवर्तनों की सीढ़ियाँ चढ़ते चले गए। परंतु क्या इस बदलाव ने रदामन की प्रतिष्ठा को भी प्रभावित किया है ? क्या आधुनिक वस्त्रों ने पारंपरिक गरिमा को बिसरा दिया, या फिर समाज की दृष्टि अब और व्यापक हो चली है ? समय के साथ परिधान और समाज की सोच में बदलाव आया है। पहले रदामनर केवल वस्त्र का टुकड़ा नहीं, बल्कि मर्यादा और संस्कृति का प्रतीक माना जाता था। क्या हम ये कह सकते हैं कि जैसे-जैसे दामन छोटा हुआ वैसे-वैसे मर्यादा और संस्कृति भी घटती गई।

पारंपरिक दामन: गरिमा का प्रतीक

रदामनर केवल वस्त्र का टुकड़ा नहीं, यह मर्यादा का आँचल, संस्कृति की पहचान और शालीनता की परिधि रहा है। भरतमुनी नारी के परिधान—साड़ी, घाघरा, अनारकली और दुपट्टा—न केवल उसके सौंदर्य को सँवारते थे, बल्कि उसकी गरिमा और मर्यादा का भी प्रथम बने। पहले रदामनर का परिधान नारी के दामनर का अर्थ भव्यता, शालीनता और गौरव से लिया जाता था। रदामन संभालनार मात्र वस्त्रों का सहेजना नहीं, बल्कि अपनी प्रतिष्ठा

और चारित्रिक दृढ़ता को बचाए रखना भी था। समाज ने मर्यादा को बाह्य आवरण में समेट दिया, जिससे व्यक्तित्व का आकलन केवल परिधानों से होने लगा।

बदलते परिधान, बदलती परिभाषाँ

समय अपनी गति से प्रवाहमान रहा, और उसके साथ समाज की सोच भी विस्तारित होती चली गई। अब वह समय नहीं, जब गरिमा की परिभाषा केवल कपड़ों की सिलवटों में समेट दी जाती थी। आज महिलाएँ अपने आत्मविश्वास की उड़ान को चुन रही हैं—जींस, टॉप, स्कर्ट, फॉर्मल सूट और इंडो-वेस्टर्न परिधानों के साथ। परिधान अब मात्र देह को ढकने का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व और विचारों की अभिव्यक्ति का स्वरूप बन गए हैं। परंपरा और आधुनिकता के ताने-बाने से एक नया फ्यूजन जन्म ले चुका है, जो संस्कृति और स्वतंत्रता के बीच संतुलन स्थापित करता है। गरिमा अब वस्त्रों की परिधि में सीमित नहीं, बल्कि आत्मसम्मान और व्यवहार में प्रतिबिंबित होती है।

क्या आधुनिकता ने दामन की प्रतिष्ठा को धूमिल किया ?

यह एक जटिल प्रश्न है, जिसकी गूँज

समय और समाज दोनों में सुनी जा सकती है। क्या वस्त्रों का लघु होना संस्कारों का ह्रास है, या फिर मानसिकता का परिष्करण ? क्या किसी स्त्री का सम्मान उसके पहनावे तक सीमित रहना चाहिए ? क्या उसकी बुद्धिमत्ता, समय अपनी गति से प्रवाहमान रहा, और उसके साथ समाज की सोच भी विस्तारित होती चली गई। अब वह समय नहीं, जब गरिमा की परिभाषा केवल कपड़ों की सिलवटों में समेट दी जाती थी। आज महिलाएँ अपने आत्मविश्वास की उड़ान को चुन रही हैं—जींस, टॉप, स्कर्ट, फॉर्मल सूट और इंडो-वेस्टर्न परिधानों के साथ। परिधान अब मात्र देह को ढकने का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व और विचारों की अभिव्यक्ति का स्वरूप बन गए हैं। परंपरा और आधुनिकता के ताने-बाने से एक नया फ्यूजन जन्म ले चुका है, जो संस्कृति और स्वतंत्रता के बीच संतुलन स्थापित करता है। गरिमा अब वस्त्रों की परिधि में सीमित नहीं, बल्कि आत्मसम्मान और व्यवहार में प्रतिबिंबित होती है।

समाज का नजरिया और स्त्रियों की स्वतंत्रता

अब भी कई स्थानों पर परिधानों को लेकर परंपरा की बेड़ियाँ जकड़ी हुई हैं। “ऐसे वस्त्र मत पहनो, लोग क्या कहेंगे ?” जैसे शब्द आज भी अगनित घरों की दीवारों से टकराते हैं। रकपड़ों से संस्कार झलकते हैं। र लड़की को, थोड़ा सभ्य कपड़े पहनो। र ऐसे खुले विचार नहीं, यह हमारी संस्कृति नहीं। र परंतु क्या परिधान ही संस्कारों की कसौटी है ? समाज को इस सोच

से आगे बढ़ना होगा कि स्त्रियों की मर्यादा वस्त्रों से नहीं, उनके विचारों से आँकी जानी चाहिए। समय के प्रवाह में समाज ने अनेक रूप बदले हैं, परंतु स्त्रियों की स्वतंत्रता को लेकर उसकी सोच अब भी दो ध्रुवों में बँटी हुई प्रतीत होती है। एक ओर आधुनिकता की लहर उन्हें आत्मनिर्भर और स्वतंत्र बना रही है, तो दूसरी ओर परंपरा की जड़ें अब भी उनकी उड़ान में अवरोध उत्पन्न करती हैं। सवाल यह उठता है—क्या स्त्री सचमुच स्वतंत्र हुई है, या यह केवल एक भ्रम है ?

संस्कृति और स्वतंत्रता: संतुलन आवश्यक है

रदामन की प्रतिष्ठा अब भी बनी हुई है, बस उसकी परिभाषा ने एक नया रूप धारण कर लिया है। परंपरा हमारी जड़ें से जुड़ी होती है, लेकिन जड़ों को मजबूती देने के लिए शाखाओं का फैलना भी जरूरी है। संस्कृति को आधुनिकता के साथ संतुलित करना आवश्यक है। महिलाओं को अपनी इच्छा से परिधान चुनने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। असली गरिमा पहनावे में नहीं, बल्कि विचारों, कर्मों और आत्म-सम्मान में बसती है। समय की सुर्खियाँ कभी पीछे नहीं दौड़तीं। परिधान बदल सकते हैं, परंतु

सम्मान और गरिमा की वास्तविक पहचान व्यक्ति के आचरण और आत्मसम्मान में होती है। रदामन की प्रतिष्ठा आज भी जीवंत है, बस उसका अस्तित्व अब कपड़ों की सिलवटों में नहीं, बल्कि आत्मविश्वास और स्वतंत्रता के विस्तृत आकाश में देखा जाता है।

कई बार जब रदामन की प्रतिष्ठा पर चर्चा होती है, तो असल में यह संस्कृति और स्वतंत्रता के बीच संतुलन का मामला होता है। परंपराएँ समाज की जड़ें से जुड़ी होती हैं, लेकिन उनका बदलते समय के साथ ढलना भी जरूरी है। महिलाओं को यह अधिकार होना चाहिए कि वे जो पहनना चाहें, पहन सकें, बिना किसी सामाजिक दबाव के। गरिमा और मर्यादा पहनावे से ज्यादा व्यक्ति के व्यवहार, सोच और कृत्यों में झलकती है। संस्कृति और आधुनिकता में संतुलन बनाए रखना सबसे अच्छा समाधान है। फैशन और पहनावा बदल सकते हैं, लेकिन सम्मान और गरिमा व्यक्ति की सोच और कर्मों से आती है। रदामन की प्रतिष्ठा आज भी बनी हुई है, बस उसकी परिभाषा बदल गई है — यह अब सिर्फ कपड़ों में नहीं, बल्कि व्यक्तित्व और आत्म-सम्मान में दिखती है।

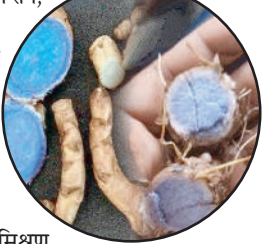
काली हल्दी और मधुमेह

काली हल्दी (Curcuma caesia) में एंटी-डायबेटिक, एंटीऑक्सीडेंट, और एंटी-इन्फ्लेमेटरी गुण होते हैं, जो रक्त शर्करा (Blood Sugar) को नियंत्रित करने, इंसुलिन संवेदनशीलता बढ़ाने, और ऑक्सीडेटिव तनाव को कम करने में सहायता करते हैं। यह टाइप-2 डायबिटीज, इंसुलिन प्रतिरोध, और डायबिटिक न्यूरोपैथी (Diabetic Neuropathy) में, विशेष रूप से लाभकारी है।

- काली हल्दी के उपयोगी गुण** -----
 - रक्त शर्करा को नियंत्रित करता है — काली हल्दी का प्रमुख यौगिक क्यूर्क्यूमिन (Curcumin) शरीर में ग्लूकोज मेटाबोलिज्म को सुधारता है।
 - इंसुलिन संवेदनशीलता बढ़ाता है — यह कोशिकाओं को इंसुलिन के प्रति अधिक संवेदनशील बनाकर ब्लड शुगर लेवल को नियंत्रित करता है।
 - पाचन सुधारता है — यह लीवर और अग्न्याशय (Pancreas) को मजबूत करके ग्लूकोज नियंत्रण में सहायक होता है।
 - ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और सूजन को कम करता है — मधुमेह के कारण होने वाली न्यूरोपैथी, हृदय रोग, और किडनी की समस्या में लाभदायक है।
 - घाव भरने की क्षमता बढ़ाता है — डायबिटिक मरीजों में घाव जल्दी नहीं भरते, लेकिन काली हल्दी इस प्रक्रिया को तेज करती है।

2. औषधीय निर्माण विधि -----

- (A) काली हल्दी और मेथी पाउडर मिश्रण (ब्लड शुगर नियंत्रण के लिए)
- घटक द्रव्य -----
- 50 ग्राम काली हल्दी पाउडर, 50 ग्राम मेथी दाना पाउडर, 25 ग्राम जामुन गुठली पाउडर, 10 ग्राम काली मिर्च पाउडर (अवशोषण बढ़ाने के लिए) ।
- निर्माण विधि -----
- * सभी सामग्री को मिलाकर एक एयरटाइट कंटेनर में स्टोर करें।
 - * चम्मच गुनगुने पानी या शहद के साथ दिन में 2 बार सेवन करें।
 - (3) उपयोगी -----
 - * रक्त शर्करा को संतुलित करता है।
 - * इंसुलिन के प्रभाव को बढ़ाता है।
 - * मधुमेह जनित समस्याओं को कम करता है।



महिलाओं के बालों पर न डालें हाथ, अन्यथा हो जाएगा वंश का नाश



देवपितृकार्य शनि अमावस्या

हिंदू धर्म में अमावस्या तिथि बहुत पावन मानी गई है। साल में 12 अमावस्या की तिथियाँ पड़ती हैं। सबका अपना महत्व है, लेकिन शनि अमावस्या बहुत विशेष ही मानी जाती है। दरअसल जो अमावस्या शनिवार के दिन पड़ती है उसे शनि अमावस्या के नाम से जाना जाता है। इसे शनिश्चरी अमावस्या भी कहा जाता है। शनि अमावस्या हर साल में एक या दो बार ही आती है। अमावस्या तिथि के दिन ही भगवान शनि देव का जन्म माना जाता है। शनि देव के प्रकोप से मुक्ति पाने के लिए इस दिन शनिदेव की पूजा की जाती है।

कब है शनि अमावस्या ? साल की पहली शनि अमावस्या चैत्र माह की अमावस्या है। हिंदू पंचांग के अनुसार 28 मार्च को शाम 7 बजकर 30 मिनट पर अमावस्या की तिथि शुरू होगी। वहीं इस तिथि का समापन अगले दिन 29 मार्च को शाम के 4 बजकर 30 मिनट पर होगा। हिंदू धर्म में उदया तिथि मानी जाती है। ऐसे में 29 मार्च को शनि अमावस्या मनाई जाएगी।

शनि अमावस्या का महत्व शनि अमावस्या का दिन शनि देव के प्रकोप को शांत करने और शनि दान के लिए सबसे अच्छा दिन माना गया है। इस दिन शनि देव से संबंधित चीजों का दान करना शुभ माना जाता है। शनि अमावस्या के दिन शनि को प्रसन्न करने के लिए दान पर सरसों के तेल में तिल डालकर चढ़ाना चाहिए। शनि देव से जुड़ी काली चीजों का दान करना चाहिए। इस दिन शनि देव का अभिषेक और उनके मंत्रों का जाप भी करना चाहिए।



पुराणों की कहानियों से आभार किसी खास अवसर पर ही महिलाएं बाल खोलती थीं, अधिकतर उन्हें बांध कर रखा जाता था क्योंकि खुले बाल रेशों की निशानीर् माने जाते थे। खुले बाल रखना अशुभता की निशानी है। मंदिर में भी खुले बाल रखना अशुभ माना जाता है। जो लड़कियाँ फैशन की आड़ में बालों को खुला रखती हैं उन पर रनकारात्मक शक्तियाँ र अपना प्रभाव शीघ्र डालती हैं। खासतौर पर जब रचन्द्रमा की कलाएं घटती हैं, र उस दौरान मन अत्यधिक भावुक होता है तो ऊपरी बाधाएं आसानी से अपना बसेरा बना

लेती हैं। पूर्णिमा के बाद स्त्रियों को ऊपरी बाधा अवश्य लगती है। क्योंकि मन विचलित होता है। रात को बिस्तर पर लेटते ही बहुत सी महिलाओं की आदत होती है बंधे बालों को खोल देती हैं। फिर सोती हैं। रपुराणों र के अनुसार इससे व्यक्तित्व पर द्वेषपूर्ण प्रभाव पड़ता है। निगेटिव ऊर्जा सक्रिय हो जाती है। ररातयागर्ः में बताया गया है, जब देवी सीता का श्रीराम से विवाह होने वाला था, उस समय उनकी माता सुनयना ने उनके बाल बांधते हुए उनसे कहा था, विवाह उपरांत सदा अपने केश बांध कर रखना।

शाकाहारी लोगों के लिए वरदान हैं ये भोजन, कभी नहीं होगी विटामिन-बी12 की कमी

विटामिन-बी12 के शाकाहारी स्रोत

- दही: दही विटामिन-बी12 का एक अच्छा स्रोत है। यह प्रोबायोटिक्स से भी भरपूर होता है, जो पाचन तंत्र को स्वस्थ रखने में मदद करते हैं।
 - नश्पूरन: नश्पूरन में विटामिन-बी12 के साथ-साथ कई अन्य पोषक तत्व भी पाए जाते हैं। यह एंटीऑक्सीडेंट्स का भी अच्छा स्रोत है।
 - चुकंदर: चुकंदर विटामिन-बी12 का एक अच्छा स्रोत है। यह आयरन और फोलेट से भी भरपूर होता है, जो रक्त निर्माण के लिए आवश्यक हैं।
 - पनीर: पनीर में विटामिन-बी12 के साथ-साथ कैल्शियम और प्रोटीन भी पाया जाता है। यह खीरियाँ और गांवापेशियों को मजबूत बनाने में मदद करता है।
- विटामिन-बी12 की कमी के लक्षण
- * थकान और कमजोरी
 - * सांस लेने में तकलीफ
 - * चक्कर आना
 - * त्वचा का पीला पड़ना



- * भूख कम लगना
 - * दर्जन घटना
 - * कब्ज या दस्त
 - * तंत्रिका तंत्र से जुड़ी समस्याएं
- विटामिन-बी12 की कमी को दूर करने के उपाय
- * अपनी डाइट में ऊपर बताए गए शाकाहारी खाद्य पदार्थों को शामिल करें।

- * विटामिन-बी12 सप्लीमेंट लें।
 - * डॉक्टर से सलाह लें।
- विटामिन-बी12 की कमी को दूर करने के लिए शाकाहारी लोग भी अपनी डाइट में कुछ बदलाव करके इस समस्या से निजात पा सकते हैं। यदि आपकी विटामिन-बी12 की कमी के लक्षण दिखाई देते हैं, तो तुरंत डॉक्टर से सलाह लें।

कमाल के 12 कुकिंग टिप्स और ट्रिक्स

- दूध को उबालने से पहले गंधीय या पैन में थोड़ा पानी डाल दें। ऐसा करने से दूध बर्तन की तली में नहीं थिपकेगा।
- बीटा बनाने की तैयारी कर रहे हैं तो गरी तले के बर्तन इस्तेमाल करें। इससे डिजर्ट का स्वाद भी बढ़ेगा और बर्तन जलने से बच जाएगा।
- किशमिश को छपरटाट डिब्बे में बंद कर उसे फ्रिज में रखने से यह ज्यादा दिनों तक फ्रेश रहेगा, जब इन्हें इस्तेमाल करना हो तब इन पर गर्म पानी डालें और किचन टॉवेल में रखकर सुखा लें।
- यदि आप रात को छोटा या राजमा भिण्गोना भूल गए हो तो उबलते पानी में बना या राजमा को भिण्गें। इसे आप एक घंटे के बाद पका सकते हैं।
- सख्त नींबू को अगर गरम पानी में कुछ देर के लिए रख दिया जाए, तो उसमें से आसानी से अधिक रस निकाला जा सकता है।
- मेथी की कड़वाहट हटाने के लिए थोड़ा सा नमक डालकर इसे थोड़ी देर के लिए अलग रख दें।
- दाल में घुटकी पिसी हल्दी और मूंगफली के तेल की कुछ बूँदें डालकर पकाएं।



- दाल को जल्दी पकाने का यह सबसे बेहतर उपाय है।
- बादाम को अगर 15-20 मिनट के लिए गरम पानी में भिण्गें दें तो उसका छिलका आसानी से उतर जाएगा।
 - कटे हुए सेब पर नींबू का रस लगाने से सेब काला नहीं पड़ता है।
 - लहसुन को लट्का सा गरम करने से उनका छिलका आसानी से उतर जाता है।
 - हरी मिर्च के डंठल को तोड़कर मिर्च को अगर फ्रिज में रखा जाए तो मिर्च जल्दी खराब नहीं होती है।
 - हरी मटर को अधिक समय तक ताजा रखने के लिए प्लास्टिक बैग में डालकर फ्रीजर में रख दें।

पशुपालकों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर असर, हरियाणा के इतिहास में सबसे लंबे कर्मचारी आंदोलनों में से एक

डिलोमा वेटरनरी एसोसिएशन हरियाणा: हजारों दिनों से संघर्ष जारी, कब मिलेगा न्याय? हरियाणा पशुपालन विभाग में महानिदेशक पद पर आईएएस अधिकारी की नियुक्ति एवं VLDA कर्मचारियों की माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा स्वीकृत मांगों की अधिसूचना जारी करवाने हेतु Diploma Veterinary Association Haryana 6333 द्वारा 1015 दिनों से आंदोलन जारी है। बिजेन्द्र सिंह बैनीवाल, राज्य प्रधान एवं रामफल राहड़, महासचिव, डिप्लोमा वेटरनरी एसोसिएशन हरियाणा का कहना है कि जब तक हरियाणा सरकार वीएलडीए कर्मचारियों की मांगों की अधिसूचना जारी नहीं करती तब तक यह आंदोलन जारी रहेगा। उनकी मांगें न्यायसंगत हैं और जनता के हित में हैं।

-ऋषि प्रकाश कौशिक, गुरुग्राम।

हरियाणा के पशुपालन और वेटरनरी सेवाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले Veterinary Livestock Development Assistants (VLDA) पिछले 1016 दिनों से अपनी जायज मांगों को लेकर संघर्षत हैं। पंचकुला के सेक्टर-5 में धरने पर बैठे ये कर्मचारी अपनी सेवा शर्तों में संशोधन, पदमान परिवर्तन और बेहतर वेतनमान की मांग कर रहे हैं। हालांकि, अभी तक सरकार की ओर से कोई ठोस समाधान नहीं निकला है, जिससे कर्मचारियों में आक्रोश बढ़ता जा रहा है।

संघर्ष की मुख्य मांगें

डिप्लोमा वेटरनरी एसोसिएशन हरियाणा द्वारा उठाई गई प्रमुख मांगें इस प्रकार हैं:

- VLDA डिप्लोमा का नाम बदलकर DVSC (Diploma in Veterinary Science) किया जाए — ताकि इसे राष्ट्रीय स्तर पर अधिक मान्यता मिले।
 - VLDA के सर्विस रूल्स में संशोधन किया जाए — जिससे कर्मचारियों की पदोन्नति और भविष्य सुरक्षित हो सके।
 - VLDA का पदनाम बदलकर VLEO (Veterinary Livestock Extension Officer) किया जाए — ताकि उनकी भूमिका को अधिक अधिकारिक दर्जा मिल सके।
 - डिप्लोमा वेटरनरी काउंसिल का गठन — जिससे इस क्षेत्र में कार्यरत कर्मचारियों के लिए एक नियामक निकाय बनाया जा सके।
 - वेतनमान में ग्रेड पे को अपग्रेड किया जाए — जिससे कर्मचारियों को उचित आर्थिक लाभ मिले।
 - हरियाणा के पशु अस्पतालों में मूलभूत सुविधाओं का सुधार — ताकि प्रदेश के पशुपालकों को बेहतर सेवाएं मिल सकें।
 - सेवा नियमों में संशोधन: Assured Career Progression (ACP) को लागू किया जाए, ताकि कर्मचारियों की पदोन्नति और करियर ग्रोथ सुनिश्चित हो सके।
 - ऑनलाइन ट्रांसफर ड्राइव में भागीदारी: सभी VLDAs को आगामी ऑनलाइन स्थानांतरण अभियान में शामिल किया जाए, जिससे स्थानांतरण प्रक्रिया में पारदर्शिता और समानता बनी रहे।
 - राजनीतिक समर्थन और सरकार की चुप्पी**
- हरियाणा में विभिन्न राजनीतिक दल इस आंदोलन को समर्थन देने लगे हैं। हाल ही में कई विपक्षी नेता धरना स्थल पर पहुंचे और एसोसिएशन की मांगों को जायज बताया। उन्होंने सरकार से जल्द समाधान निकालने की अपील की। वहीं, सरकार की चुप्पी और निर्णिक्रियता से

प्रदर्शनकारियों में नाराजगी बढ़ रही है। पशुपालन विभाग में VLDA की भूमिका अहम होने के बावजूद उनकी अनदेखी हो रही है। यह सवाल उठने लगे हैं कि क्या सरकार इस क्षेत्र को गंभीरता से ले रही है ?

सरकार की प्रतिक्रिया क्या रही है ?

अब तक हरियाणा सरकार की ओर से कोई ठोस बयान या ठोस कार्रवाई नहीं हुई है। कुछ उच्च अधिकारियों ने बातचीत के संकेत दिए हैं, लेकिन कोई ठोस निर्णय नहीं लिया गया। सरकार और कर्मचारियों के बीच बार-बार वार्ता असफल रही है।

पशुपालकों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर असर

हरियाणा एक कृषि और पशुपालन प्रधान राज्य है, जहां लाखों पशुपालक सरकारी पशु चिकित्सालयों पर निर्भर हैं। VLDA कर्मचारियों की कमी और उनकी समस्याओं का समाधान न होना, सीधा असर पशुपालकों पर डाल रहा है। अगर VLDA कर्मचारियों की स्थिति में सुधार किया जाता है, तो इससे पशु स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता भी बेहतर होगी। यह सीधे तौर पर ग्रामीण अर्थव्यवस्था और डेयरी उद्योग को मजबूती देगा। हरियाणा में गाय, भैंस, बकरी, भेड़ और अन्य पशुधन की बड़ी संख्या है। VLDA कर्मचारी ही गांव-गांव जाकर पशुओं की बीमारियों का इलाज और टीकाकरण करते हैं। सरकार की उपेक्षा से पशुपालकों को गुणवत्तापूर्ण सेवाएं नहीं मिल रही हैं।

प्रदर्शनकारियों की अगली रणनीति

धरना 1000 दिनों से अधिक समय से जारी है, लेकिन अब कर्मचारी अपनी मांगों को लेकर और आक्रामक रुख अपनाने की तैयारी में हैं। प्रदर्शक भी VLDA कर्मचारियों द्वारा विरोध प्रदर्शन तेज किया जाएगा।



डिप्लोमा बंद हड़ताल — अगर सरकार गंभीरता नहीं दिखाती, तो VLDA कर्मचारियों द्वारा सेवाएं ठप करने की चेतावनी दी जा सकती है, जिससे पशुपालन विभाग में भारी संकट आ सकता है।

विशेषज्ञों की राय: क्या समाधान निकल सकता है ?

विशेषज्ञ मानते हैं कि VLDA कर्मचारियों की मांगें पूरी तरह से जायज हैं और सरकार को इसे गंभीरता से लेना चाहिए। “अगर पशुपालन क्षेत्र को मजबूत बनाना है, तो VLDA कर्मचारियों को प्रोत्साहित करना होगा। उनका पदमान और वेतनमान सुधारने से पशुपालकों को भी बेहतर सेवाएं मिलेंगी।”

“देशभर में पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए योजनाएं बनाई जा रही हैं, लेकिन जब तक फील्ड लेवल पर काम करने वाले कर्मचारियों को

सम्मानजनक वेतन और पद नहीं मिलेगा, तब तक योजनाओं का सही लाभ नहीं मिलेगा।”

क्या होगा आगे ?

यह संघर्ष अब हरियाणा के इतिहास में सबसे लंबे कर्मचारी आंदोलनों में से एक बन चुका है। सवाल यह है कि क्या सरकार इस पर ध्यान देगी या यह आंदोलन और लंबा खिंचेगा ? सरकार को VLDA कर्मचारियों के प्रतिनिधियों से बातचीत करनी चाहिए। डिप्लोमा वेटरनरी काउंसिल का गठन करने की प्रक्रिया शुरू करनी चाहिए। प्रदाना और वेतनमान सुधारने के लिए सर्वे और समीक्षा रिपोर्ट तैयार करनी चाहिए।

अगर सरकार समय रहते समाधान निकालती है, तो यह न केवल कर्मचारियों के हित में होगा, बल्कि पूरे पशुपालन क्षेत्र की बेहतरी के लिए भी एक अहम कदम साबित होगा।

निष्कर्ष

हरियाणा सरकार को अब इस मुद्दे पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। 1016 दिनों से चल रहे इस संघर्ष का तत्काल समाधान निकालना न केवल VLDA कर्मचारियों के हित में है, बल्कि यह पशुपालकों, ग्रामीण अर्थव्यवस्था और राज्य के विकास के लिए भी आवश्यक है। अगर सरकार ने जल्द कदम नहीं उठाए, तो यह आंदोलन और बड़ा रूप ले सकता है, जिससे पशुपालन सेवाएं प्रभावित हो सकती हैं और पशुपालकों को भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है।

प्रधानमंत्री मोदी से सांसद चौधरी ने की मुलाकात राष्ट्रपति द्वारा दिए गए भोज में भी हुए शामिल

जगदीश सीरवी

नई दिल्ली/पाली सांसद और वन नेशन-वन इलेक्शन की संयुक्त संसदीय समिति अध्यक्ष पीपी चौधरी ने शुक्रवार को नई दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात की। यह शिफ्टाचार भेंट बताई जा रही है। सांसद चौधरी ने इस भेंट में प्रधानमंत्री मोदी को पारंपरिक लघु चित्रकला की एक विशेष तस्वीर भी भेंट की। इस तस्वीर को मां चामुण्डा सेल्फ ग्रुप के द्वारा बनाया गया, जो कि आदिवासी भील समाज की महिलाओं को समूह है। यह समूह विशेष रूप से आदिवासी क्षेत्रों में रह रही गरीबी रेखा से नीचे एवं पिछड़े परिवारों की महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में कार्य कर रहा है। प्रधानमंत्री मोदी ने इस विशेष कृति

पर अपनी प्रसन्नता जाहिर की। इस शिफ्टाचार भेंट में सांसद चौधरी ने ‘‘एक राष्ट्र-एक चुनाव’’ जेपीसी द्वारा ली गई बैठकों की संक्षिप्त जानकारी भी दी। प्रधानमंत्री मोदी से हुई भेंट की तस्वीर को सोशल मीडिया पर साझा करते हुए सांसद ने इसे भावुक क्षण बताया। उन्होंने लिखा कि ‘‘ प्रधानमंत्री मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व ने भारत के वैश्विक कद को बढ़ाया है और सभी क्षेत्रों में विकास को नई गति दी है। हमेशा की तरह, आपने गर्मजोशी व स्नेह दिखाया और राष्ट्रसेवा का अमूल्य मार्गदर्शन दिया। प्रधानमंत्री जी से मिलकर हृदय भावुक हुआ। आपके उदात्त सानिध्य में विकसित भारत निर्माण के लिए काम करना जीवन का सबसे बड़ा सौभाग्य है। अपना बहुमूल्य समय देने

के लिए आपका हृदय की गहराईयों से आभार।’’ *राष्ट्रपति द्वारा दिए गए भोज में हुए शामिल: * इससे पहले महामहिम राष्ट्रपति दौपट्टी मुर्मू के आमंत्रण पर नई दिल्ली स्थित राष्ट्रपति भवन में आयोजित अल्पाहार कार्यक्रम में सांसद चौधरी शामिल हुए। इस अवसर पर वे राजस्थान एवं एनडीए से जुड़े सांसदों के साथ मौजूद रहे। भोज के पश्चात सांसद चौधरी ने कहा कि उन्हें महामहिम राष्ट्रपति का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। उन्होंने इसे एक महत्वपूर्ण अनुभव बताया हुए कहा कि राष्ट्रपति मुर्मू जी की सौम्यता एवं सहजता आदर्श है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वे निरंतर प्रयासरत रहेंगे।



संस्कारशाला: सेफ्टी पिन - सरलता में छिपी स्थिरता और जीवन के मूलभूत सिद्धांत

ऑ. अंकुर शरण

कुछ विचार ऐसे होते हैं, जो अपनी पहली झलक में ही पूर्ण होते हैं और समय के साथ बिना किसी परिवर्तन के स्थिर बने रहते हैं। सेफ्टी पिन इसका एक अद्भुत उदाहरण है। इसका डिजाइन जब पहली बार अस्तित्व में आया, तब से लेकर आज तक, इसमें कोई बड़ा बदलाव नहीं हुआ। यह अपनी मूल संरचना में ही पूर्ण था और आज भी उसी ही उपयोगी है जितनी वर्षों पहले थी।

सेफ्टी पिन: एक छोटे आविष्कार की बड़ी सीख

सेफ्टी पिन का आविष्कार 1849 में अमेरिकी आविष्कारक वाल्टर हंट (Walter Hunt) ने किया था। उनका उद्देश्य एक ऐसा उपकरण बनाना था जो कपड़ों को जोड़ने के लिए सुरक्षित, सरल और सुविधाजनक हो। उन्होंने इसे इस तरह डिजाइन किया कि यह उपयोग के दौरान नुकाली खुई से किसी को चोट न पहुंचाए। उनकी यह सोच आज भी सेफ्टी पिन के मूल स्वरूप में मौजूद है।

इस छोटे-से आविष्कार में हमें जीवन के कई बड़े सबक मिलते हैं:

- सरलता में शक्ति होती है**
सेफ्टी पिन दिखने में साधारण होती है, लेकिन इसका उपयोग बहुआयामी है। जीवन में भी हमें यह समझना चाहिए कि सादगी से जीना और चीजों को जटिल न बनाना ही असली बुद्धिमानि है। जब हम अपने जीवन के निर्णयों को सरल और स्पष्ट रखते हैं, तो हम स्थिरता और सफलता प्राप्त कर सकते हैं।
- स्थिरता और विश्वसनीयता**
एक अच्छी चीज को बार-बार बदलने की जरूरत नहीं होती। सेफ्टी पिन का डिजाइन पहली बार में ही इतना सटीक था कि इसे बदलने की आवश्यकता नहीं पड़ी। इसी तरह, जीवन में कुछ मूलभूत सिद्धांत होते हैं जो समय के साथ नहीं बदलते, जैसे - ईमानदारी, परिश्रम, धैर्य और निष्ठा। ये मूल्य किसी भी परिस्थिति में हमें सही मार्ग दिखाते हैं।
- छोटे बदलाव, बड़ी सुरक्षा**
सेफ्टी पिन में एक छोटा-सा लॉकिंग



मैकेनिज्म होता है, जो इसे सुरक्षित बनाता है। इसी तरह, जीवन में भी छोटे-छोटे पहलियात हमें बड़ी समस्याओं से बचाते हैं। चाहे वह वित्तीय निर्णय हो, रिश्तों की देखभाल हो, या स्वास्थ्य का ध्यान रखना हो, यदि हम छोटे-छोटे सुधार करें, तो बड़ी चुनौतियों से बच सकते हैं।

- 4. हर परिस्थिति में उपयोगी बने रहना**
सेफ्टी पिन का सबसे बड़ा गुण इसकी बहुउपयोगिता है। यह सिर्फ कपड़ों को

जोड़ने के लिए ही नहीं, बल्कि कई अन्य कार्यों में भी काम आती है। इसी तरह, हमें भी अपने जीवन में बहुआयामी और लचीला बनने की जरूरत है। यदि हम किसी भी परिस्थिति के अनुसार ढलने की क्षमता रखते हैं, तो हम हमेशा प्रासंगिक बने रह सकते हैं।

- 5. साधारण चीजों की कद्र करें**
हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में सेफ्टी पिन जैसी छोटी चीजों की अहमियत तब समझ आती है जब वे न हों। जीवन में भी हमें उन लोगों और चीजों की कद्र करनी चाहिए जो

दिखने में साधारण लगते हैं, लेकिन असल में बहुत उपयोगी होते हैं, जैसे - परिवार, दोस्त, और हमारे नैतिक मूल्य।

सेफ्टी पिन न केवल एक सरल उपकरण है, बल्कि यह हमें जीवन के महत्वपूर्ण सबक भी सिखाती है। जब कोई विचार पूर्ण होता है, तो उसे बार-बार बदलने की जरूरत नहीं पड़ती। इसी तरह, जीवन में भी कुछ सिद्धांत होते हैं जो अटल होते हैं - सत्य, सरलता, और स्थिरता। अगर हम इन मूल्यों को अपनाएं, तो हमारा जीवन भी सेफ्टी पिन की

'ऐसा तो इंदिरा गांधी भी नहीं कर सकी थीं', पाकिस्तान पर बोलते हुए जयशंकर ने क्यों किया पूर्व पीएम का जिक्र

लोकसभा में विदेश मंत्री एस जयशंकर ने पाकिस्तान और बांग्लादेश की कट्टर मानसिकता को लेकर अपने विचार साझा किए। उन्होंने कहा कि पाक और बांग्लादेश में अल्पसंख्यों की स्थिति पर भारत अपनी नजर रख रहा है। विदेश मंत्री ने कहा कि पड़ोसी देश की कट्टरपंथी और धर्मांध मानसिकता को हम नहीं बदल सकते। इंदिरा गांधी भी ऐसा नहीं कर सकी थीं।

नई दिल्ली। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने शुक्रवार को लोकसभा में पाकिस्तान और बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों पर हो रहे हमलों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि नई दिल्ली पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों के साथ किए जा रहे व्यवहार पर बहुत बारीकी से नजर रख रही है,

लेकिन हम पड़ोसी देश की कट्टरपंथी और धर्मांध मानसिकता को नहीं बदल सकते। दरअसल, प्रश्नकाल के दौरान जयशंकर ने पाकिस्तान में फरवरी में हिंदुओं पर हुए हमलों की 10 घटनाओं का इशारा किया। उन्होंने कहा कि इनमें से सात घटनाएं जबरन धर्मांतरण से जुड़ी थीं, दो अपहरण से और एक मामले में होली मना रहे छात्रों के खिलाफ पुलिस कार्रवाई हुई थी। उन्होंने बताया कि तीन मामले सिख परिवार के

खिलाफ अत्याचार के थे, जिनमें पहला परिवार पर हमला, दूसरा फिर से गुरुद्वारा खोलने पर धमकाना और तीसरा सिख समुदाय की लड़कों का अपहरण और जबरन धर्मांतरण था। **बांग्लादेश में भी अल्पसंख्यकों पर भारत की नजर**
इसके अलावा दो मामले अहमदिया समुदाय से और अन्य ईसाई व्यक्ति पर ईशनिंदा का मामला था। भारत ऐसे मामलों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उठाता है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि पाकिस्तान की तरह हम बांग्लादेश में कि इंदिरा गांधी भी ऐसा नहीं कर पाई थीं।

अल्पसंख्यकों पर नजर रखते हैं। 2024 में अल्पसंख्यकों

पर हमले की 2400 घटनाएं थीं और 2025 में 72 मामले। इस मामले को अपने समकक्ष के सामने भी उठाया। बांग्लादेश दौरे के दौरान विदेश सचिव ने भी इसे उठाया। यह हमारी सरकार के लिए चिंता का विषय बना हुआ है। **इंदिरा गांधी नहीं बदल पाई थी पाकिस्तान की मानसिकता**
वहीं, क्या पाकिस्तान के खिलाफ पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की तरह भारत कड़ी कार्रवाई की योजना बना रहा है, के सवाल पर जयशंकर ने कहा कि नई दिल्ली अपनी स्थिति को अच्छी तरह से बता रही है, लेकिन एक देश और सरकार के रूप में हम पड़ोसी देश की कट्टरपंथी और धर्मांध मानसिकता को नहीं बदल सकते। यहां तक कि इंदिरा गांधी भी ऐसा नहीं कर पाई थीं।

जागरूकता रहें 'एकरूपता' ...!

ये देखों छोटी-सी बात है जागरूकता, मामूली-सी है लगती न कोई रूफकता। आदमी दुनिया में हैं सबसे मतिमान, उसी के हाथों है बहुत कुछ गतिमान। मानसिक शक्ति ही दे सकती है मति, जहाँ बुद्धिमता विराजती है सरस्वती।

ये देखों छोटी-सी बात है जागरूकता, मामूली-सी है लगती न कोई रूफकता। सभी सांसारिक 'व्याप' में उलझ रहें, अपना दु:ख, तकलीफ किसको कहें। कहाँ बैठाएँ सामंजस्य और ये शक्ति, संसार में स्वयं को भी होती विरपित।

ये देखों छोटी-सी बात है जागरूकता, मामूली-सी है लगती न कोई रूफकता। कुछ पाने का लोभ, अतिरिक्त खास, जब जीवन में न मिले संतुष्टि पास। चाहे करों नौकरी ना रहे तुम 'उदास', एक ही इत्तजा ना बने उनके 'दास'। बस यहीं जागरूकता रहें 'एकरूपता' !

संजय एम तराणेकर (कवि, लेखक व समीक्षक)



आस्था और परिवर्तन का संगम : नवसंवत्सर 2082

जब सुबह की पहली किरण धरती को चूमती है, तो मानो स्वर्णिम आलिंगन में सुष्टि को बाँध लेती है। नव अंकुर मिट्टी को चीरकर जीवन की आहट सुनाते हैं, हवा में पत्तों की सरसराहट एक मधुर राग बनकर गूंजती है, और चारों ओर मंगल ध्वनियाँ एक पवित्र संगीत की तरह फैलने लगती हैं। यह वह क्षण है जब प्रकृति अपने पूरे वैभव के साथ नए समय का अभिनंदन करती है—एक ऐसी शुरुआत जो हृदय को आनंद और शक्ति से भर देती है। इस बार यह पल और भी अनुपम है, क्योंकि नवरात्रि की पावन घड़ी 'कालयुक्त' नामक नव संवत्सर के साथ एक मधुर स्वर-लहरी में गूंज उठी है। यह संयोगमन को रोमांच से भर देता है—शक्ति और समय का एक अलौकिक मिलन, एक ऐसा नृत्य जो सुष्टि को नए रंगों से सजाने को तैयार है। माता दुर्गा की भक्ति का उत्सव और समय का नया चक्र एक साथ शुरू हो रहे हैं, मानो प्रकृति और परमात्मा मिलकर हमें एक महान संदेश दे रहे हों।

हिंदू संस्कृति में संवत्सर कोई साधारण तिथि परिवर्तन नहीं, बल्कि समय की एक जीवंत कथा है। यह एक चक्र का समापन और दूसरे का प्रारंभ है, एक ऐसा कालखंड जो अपने नाम और स्वभाव से आने वाली दिनों की दिशा रचता है। इस बार का संवत्सर है 'कालयुक्त'—एक ऐसा नाम जो

सुनते ही मन में गहरे अर्थों की लहरें उठाता है, जैसे कोई प्राचीन मंत्र जो शक्ति और हृदय से ओतप्रोत हो। 'काल' वह शक्ति है जो समय को थामती है, परिवर्तन को जन्म देती है, और न्याय का पहिया घुमाती है। 'युक्त' वह बंधन है जो सबको एक सूत्र में पिरोता है। कालयुक्त संवत्सर यानी वह समय, जो परिवर्तन और न्याय का एक स्वर्णिम संगम बनकर हमारे सामने खड़ा है। यह वर्ष हमें पुकारता है—समय के साथ कदम मिलाओ, कर्म को अपना आधार बनाओ, वरना यह चक्र तुम्हें पीछे छोड़ देगा।

नव संवत्सर का भाव ऐसा है, मानो कोई जादुई रंग जीवन के कैनवास पर बिखर रहा हो। ज्योतिष की दृष्टि से यह वर्ष उथल-पुथल और शांति का एक अनोखा मिश्रण है। समाज में नई हलचल होगी—पुरानी व्यवस्थाएँ धराशायी होंगी, नई नींवें मजबूत होंगी। शासन के गतिार्यों में नए चेहरे और समीकरण उभरकर चमकेगें, धन-व्यवस्था की नाव ऊँची लहरों पर नृत्य करेगी। प्रकृति भी इस नाटक में अपनी भूमिका निभाएगी—कहीं वर्षा की मधुर झंकार गूंजेगी, कहीं सुखे की सन्नाटी छाएगी, तो कहीं हवा का तेज शोर सुनाई देगा। लेकिन इन सबके बीच एक सुनहरा प्रकाश चमकेगा—आस्था का तेज। लोग धर्म की ओर लौटेंगे, संस्कृति को हृदय से लगाएँगे। कालयुक्त संवत्सर एक गूंजती

पुकार है—समय को पहचानो, परिश्रम को पूजो, और परिवर्तन को गले लगाओ। जो ऐसा करेगा, उसके लिए यह वर्ष अनमोल उपहारों का भंडार लेकर आएगा।

नवरात्रि का आगमन अपने आप में एक महोत्सव है—शक्ति का उन्माद, भक्ति का रंग, और साधना का प्रकाश। नौ रातें, जब हर घर माता दुर्गा की आराधना से मंदिर बन जाता है, और हर प्राण में एक नई ऊर्जा का संचार होता है। यह वह समय है जब हम अपनी भीतरी शक्ति को जगाते हैं, अपने भीतर के राक्षसों से युद्ध करते हैं। और जब यह पावन पर्व कालयुक्त संवत्सर के साथ शुरू होता है, तो यह क्षण और भी चमकदार हो उठता है। यह ऐसा है जैसे माता दुर्गा हमें स्वर्णिम रथ पर सवार होकर हमें आशीर्वाद देने उतरी हों। जैसे उन्होंने महिषासुर को परास्त किया, वैसे ही यह समय हमें अपने अज्ञान, आलस्य और अहंकार को कुचलने की शक्ति देता है। यह संयोग एक शंखनाद है—नया समय आ गया है, नई शुरुआत का क्षण है।

यह संवत्सर और नवरात्रि का संगम हर स्तर पर बदलाव का वादा करता है। व्यक्तिगत जीवन में यह हमें अपने लक्ष्यों को नए सिरे से गढ़ने का अवसर देता है। समाज में यह जागृति की लहर लाएगा, और राष्ट्र के लिए यह प्रगति का एक नया अध्याय रचेगा। 30 मार्च 2025 को शुरू होने वाली यह यात्रा कोई

साधारण तिथि नहीं, बल्कि एक नई सुबह का स्वर्णिम आलोक है। इस दिन शुरू होने वाला हर कार्य सफलता की सुगंध से महकेगा, बशर्ते हम इसे पूरे मन से अपनाएँ। यह समय हमें पुकारता है—अपने सपनों को पंख दो, अपने संकल्प को अटल करो, और इस नए चक्र के साथ कदम मिलाओ।

ज्योतिषी बताते हैं कि कालयुक्त संवत्सर में धर्म का झंडा ऊँचा लहराएगा। शासन नई नीतियाँ लाएगा, जो समाज को नई राह दिखाएगा। धन के क्षेत्र में उत्साह और चुनौतियाँ साथ-साथ दौड़ेंगी। प्रकृति का स्वभाव भी बदलता रहेगा—कभी कोमल वर्षा की झंकार, कभी उग्र तूफानों का शोर। लेकिन इस सबका मूल मंत्र एक ही है—समय। जो समय को समझेगा, संयम से चलेगा, और कर्म को गले लाएगा, उसके लिए यह वर्ष एक चमकदार कृति बन जाएगा। यह संवत्सर हमें सिखाता है कि जीवन का हर पल अनमोल है, और इसे व्यर्थ गँवाना सबसे बड़ा अपराध।

यह शुभ संगम हमें कुछ अनमोल सबक देता है। यह कहता है—परिवर्तन से भय मत करो, उसे अपना सहचर बनाओ। समय को अपना गुरु मानो, क्योंकि वही तुम्हें मार्ग दिखाता है। कर्म को अपना धर्म बनाओ, क्योंकि वही तुम्हारा भाग्य रचता है। और सबसे बड़ी बात—



झारखंड के मानव तस्करी के 25 नाबालिग बच्चे मुक्त

खूँटी के 07, साहेबगंज व गोगुड़ा जिले के 18 बच्चे

कार्तिक कुमार परिखा, स्टेट हेड झारखंड

रांची: मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन के प्रयास से लगातार मानव तस्करी के शिकार बालक/बालिकाओं को मुक्त कराकर उनके घरों में पुनर्वासित किया जा रहा है। इसी कड़ी में महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा संचालित एकीकृत पुनर्वास सह संसाधन केंद्र, नई दिल्ली द्वारा मानव तस्करी के शिकार 25 नाबालिग बच्चों को वापस झारखण्ड पुनर्वासित किया जा रहा है। इन सभी बच्चों की उम्र 12 से 17 वर्ष के बीच है। इनमें से ज्यादातर बच्चियों को एकीकृत पुनर्वास सह संसाधन केंद्र द्वारा दिल्ली पुलिस एवं स्थानीय एन जी ओ के सहयोग से दिल्ली एवं दिल्ली से सम्बंधित राज्यों के विभिन्न स्थानों से रेस्क्यू किया गया है। एकीकृत पुनर्वास सह संसाधन केंद्र नई दिल्ली की नोडल ऑफिसर श्रीमती नचिकेता ने जानकारी दी कि साहेबगंज जिला के 02 मानव तस्करी पुनर्वास मरांडी एवं ईश्वर तुरी को पकड़ने के दौरान उनके द्वारा बताये गए बच्चों से सम्बंधित सूचना के आधार पर इन सभी बच्चों को दिल्ली एवं दिल्ली के आसपास के राज्यों से एकीकृत पुनर्वास सह संसाधन केंद्र में कार्यरत राहुल सिंह एवं निर्मला खलखो के प्रयास के बाद निकाला गया है। ये बच्चे गुरुवार को सुरक्षित सीडीपीओ खूँटी - अल्ताफ खान एवं साहेबगंज की सएस डी पी ओ- पूनम कुमारी के नेतृत्व में रांची लाये गये।

'मो बस' 8 और शहरों में चलेगी

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा
भुवनेश्वर: राज्य सरकार ने आठ और शहरों में 'मो बस' शुरू करने का निर्णय लिया है। सीआरयूटी की एक महत्वपूर्ण बोर्ड बैठक में निर्णय लिया गया है कि यह बस सेवा अंगुल, झारसुगुड़ा, जाजपुर, कोंकण, बारीपदा, जयपुर, बालासोर और रायगड़ा शहरों के लोगों को प्रदान की जाएगी। दुर्घटनाओं को रोकने के लिए भी कदम उठाए गए हैं तेज गति पर अंकुश लगा दिया गया है। इलेक्ट्रिक बसों की गति 35 किलोमीटर प्रति घंटा निर्धारित की गई है, जबकि डीजल बसों की गति 40 किलोमीटर प्रति घंटा निर्धारित की गई है। इसके साथ ही सुरक्षित ड्राइविंग का प्रशिक्षण भी दिया जाएगा। क्योंकि अधिकतर समय हमें बस चालकों द्वारा दुर्घटनाएं करने की शिकायतें मिलती रहती हैं। इसे रोकने के लिए सरकार ने निर्णय लिया है कि ड्राइवरों को उचित प्रशिक्षण देने के बाद ही नौकरी पर रखा जाएगा।



निलंबित कांग्रेस विधायकों का अनूठा विरोध प्रदर्शन: घंटी बजी, 14 निलंबित विधायक रैली में शामिल हुए

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर : विधानसभा जाते समय कांग्रेस कार्यकर्ता को पिटाई। कांग्रेस की आज भी विरोध रैली, निलंबित विधायकों ने कांग्रेस भवन से घंटी बजाई और अशोक नगर स्थित आर्य संस्कृति मंदिर गए। कांग्रेस विधायक दल के नेता रामचंद्र कदम, तारा बाहिनी के अध्यक्ष रमेश जेना समेत



14 निलंबित विधायक और कार्यकर्ता विरोध रैली में शामिल हुए। खबरों के अनुसार, गुरुवार को गांधी मार्ग पर महिला सुरक्षा को लेकर कांग्रेस के प्रदर्शन के दौरान कार्यकर्ताओं और पुलिस के बीच झड़प हो गई। दोनों पक्षों में से किसी को भी नहीं बख्शा गया। बातचीत किसी हंगामे या धक्का-मुक्की पर खत्म नहीं हुई। दोस्त पर लाटियों और पत्थरों व कुर्सियों से हमला किया गया। गांधी मार्ग कलाबाजी का मैदान बन गया था। पुलिस लाठीचार्ज में एक कांग्रेस कार्यकर्ता घायल हो गया। कांग्रेस ने अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की है।

देवेंद्र छोटू बने हिंदू आर्मी संगठन के मथुरा से जिलाध्यक्ष



बाजना। क्षेत्र के गांव मानागढ़ी निवासी भाजपा नेता देवेन्द्र चौधरी उर्फ छोटू को हिन्दू आर्मी द्वारा मथुरा का जिलाध्यक्ष बनाया गया है। मंगलवार को हिन्दू आर्मी के राष्ट्रीय अध्यक्ष देशभक्त सचिन हिंदू द्वारा जिलाध्यक्ष का मनोनयन पत्र देकर घोषणा की गई। देवेन्द्र छोटू इससे पहले भी भाजपा के दो बार के मंडल अध्यक्ष रहे हैं। देवेन्द्र संघ से भी काफी लंबे समय से जुड़े हुए हैं। उन्होंने 2021 में भाजपा से जिला पंचायत प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ा, लेकिन चुनाव में उन्हें सफलता ना मिल सकी। हिंदू आर्मी संगठन ने देवेन्द्र छोटू को मथुरा से जिला अध्यक्ष घोषित कर एक नई पारी की शुरुआत की। वहीं हिंदू आर्मी के राष्ट्रीय अध्यक्ष सचिन कुमार हिंदू ने अपने मनोनयन पत्र पर घोषणा कर देवेन्द्र छोटू को मथुरा से जिला अध्यक्ष बनाया है। साथ ही राष्ट्रीय अध्यक्ष ने जिला अध्यक्ष पद की गरिमा को बनाते हुए संगठन के प्रति कर्तव्यनिष्ठ एवं हिंदुत्व के समर्थन में प्राथमिकता देते हुए संगठन को मजबूती प्रदान करने की कामना की है। देवेन्द्र छोटू को हिन्दू आर्मी के जिलाध्यक्ष बनते ही बधाई देने वाला लड़ा, लेकिन चुनाव में उन्हें सफलता ना मिल सकी। प्रधान जगवीर सिंह, कैप्टन छीतरिया सिंह, दुर्गा सिंह, चेतन, किशोर, अमर सिंह, कमांडो रमेश, धूरे नेता, रवीकरन, श्याम शर्मा, रामेश्वर शर्मा, राहुल ठाकुर, सोनू दीक्षित, संतोष सिंह, जगदीश सिंह सहित आदि स्वागतकर्ता स्वागत करने पहुंचे।

प्रो. आरके जैन “अरिजीत”, बड़वानी (मप्र)